कोरोना वायरस महामारी का मुकाबला करने में धर्म की भूमिका

विभिन्न धर्मों और अंतर्धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों का संयुक्त वक्तव्य

नई दिल्ली – 21 अप्रैल 2020

पिछले दो महीनों से भी अधिक समय से हमारी धरती एक ऐसे सर्वव्यापी स्वास्थ्य संकट से गुजर रही है जिसकी तीव्रता और व्यापकता अभूतपूर्व है। कोरोना वायरस से अबतक बीस लाख से अधिक लोग संक्रमित हुए हैं, हजारों लोग इस रोग के प्रकोप से काल-कवलित हो चुके हैं और विश्व की अर्थ-व्यवस्था एवं सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले इसके दीर्घगामी प्रभाव का वर्तमान समय में आकलन कर पाना भी कठिन है। इस विनाशकारी और निराशा भरी आपदा के दौर में, धर्म का उल्लेख सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रसंगों में किया गया है। एक ओर, इस अनिश्चितता भरे दौर में लोग आशा, शक्ति और आध्यात्मिक संबल के लिए धर्म की ओर उन्मुख हुए हैं। इस आस्था ने लोगों के मन में एकता और दूसरों की सेवा की भावना का संचार किया है – खास तौर पर अत्यंत वंचित तबके के लोगों की। साथ ही, दूसरी ओर, धर्म के नाम पर अलगाव और पूर्वाग्रहों को भी बढ़ावा दिया गया है और विज्ञान को नकारने एवं अंधविश्वास के पोषण की प्रवृत्ति भी सामने आई है।

इस अभूतपूर्व संकट के समय, जबकि इससे निबटने के लिए एकतापरक प्रयास की जरूरत है, धर्म के नाम पर दिए गए वक्तव्यों और अनुशंसाओं में एक स्वस्थ आधार और समरूपता की जरूरत है। इन वक्तव्यों के माध्यम से इस महामारी का सामना करने के सम्बंध में कोई उलझन खड़ी नहीं की जानी चाहिए और न ही स्थापित वैज्ञानिक परामर्शों से उसका कोई विरोधाभास ही झलकना चाहिए। इस अत्यंत आवश्यक पहल के प्रत्युत्तर में, हम – विभिन्न धर्मों और अंतर्धार्मिक समूहों के प्रतिनिधि – सभी धर्मों में समान रूप से पाए जाने वाले उन सिद्धान्तों को दुहराने के लिए यह वक्तव्य जारी कर रहे हैं जो वर्तमान संकट के प्रतिकार के उद्देश्य से हमपर गहनतम प्रभाव डालते हैं। हम सभी धर्मों में विश्वास रखने वालों से अपील करते हैं कि इन सिद्धान्तों के प्रति वे सब समान प्रतिबद्धता के साथ एकता का परिचय दें और व्यापक राष्ट्रीय हित में अपने मतभेदों को दरकिनार कर दें। अंततः, सबके कल्याण के लिए कार्य करने हेतु मानव की अंतरात्मा को ऊर्जस्वित करने वाला सबसे बड़ा साधन धर्म ही है। यदि धर्म के संसाधनों को एकसूत्रता में न पिरोया गया और इस सामूहिक प्रयास को गतिशीलता प्रदान करने के लिए उसे एक समन्वित एवं एकजुट शक्ति के रूप में प्रस्तुत न किया गया तो यह एक अक्षम्य क्षति होगी।

सर्वप्रथम हम यह कहना चाहेंगे कि यदि इस वर्तमान समय में धर्म को एक स्वर से अपनी आवाज बुलन्द करनी है तो हमें सभी धर्मों के समान आधारों को लेकर एकमत होना होगा। हालांकि प्रत्येक धर्म पर अपने विशिष्ट इतिहास और उस भौगोलिक पृष्ठभूमि की छाप है जहां वह धर्म प्रकट हुआ था लेकिन फिर भी सभी धर्मों की मूलभूत नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षाएं एक समान हैं। सभी धर्म मनुष्य में निहित नैतिक एवं आध्यात्मिक क्षमताओं को विकसित करने और ऐसे समाजों के निर्माण के उद्देश्य से ही प्रकट हुए हैं जिनमें इन क्षमताओं को पुष्पित किया जा सके और उन्हें समाज के कल्याण एवं विकास की दिशा में मोड़ा जा सके। हालांकि बदलती हुई ऐतिहासिक जरूरतों एवं परिस्थितियों के अनुरूप विभिन्न धर्मों की आध्यात्मिक शिक्षाओं, विधानों और रीति-रिवाज़ों में भिन्नता पाई जाती है किंतु उन सभी धर्मों में एक समानता देखी जा सकती है कि वे सब मानवजाति की सामूहिक प्रौढ़ता को विकसित करने के उद्देश्य को पूरा करते हैं। धर्मों में निहित इस अनिवार्य एकता की समझ हमें वह आधार उपलब्ध कराती है जिसपर सभी धर्मों के लोग अपनी सामूहिक चुनौतियों से जूझने के लिए एक सर्वसामान्य विरासत से प्रेरणा ले सकते हैं। यह उन धार्मिक पूर्वाग्रहों के परित्याग के लिए भी हमारे समक्ष एक अचूक आधार प्रस्तुत करता है जो, जैसाकि देश में घटित हाल की कुछ घटनाओं से प्रकट होता है, संकट के ऐसे दौर में सामाजिक तनाव को बढ़ावा दे सकते हैं।

धर्म का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त जिसे इस वक्त रेखांकित किया जाना जरूरी है वह है मानवजाति की एकता। सभी धर्मों के मूल में मनुष्य जाति के बारे में एक आध्यात्मिक संकल्पना निहित है जो सभी भौतिक सीमाओं से परे है। यह आध्यात्मिक सत्य – जिसे हम आत्मा के नाम से जानते हैं – दिव्य गुणों एवं विभूषणों का स्रोत है जो मनुष्य को परोपकार, निःस्वार्थ भावना एवं दूसरों को भी अपनी तरह समझने की चेतना का संचार करता है। यही आध्यात्मिक प्रकृति हर व्यक्ति की अनिवार्य पहचान है और हर व्यक्ति की यही सर्वसामान्य पहचान वह विशेषता है जिसके कारण दुनिया के सभी धर्मग्रंथ हर मनुष्य की समानता की घोषणा करते हैं। धर्म हमें इस आदर्श की शिक्षा भी देता है कि सम्पूर्ण मनुष्य जाति परस्पर एक-दूसरे से जुड़ी हुई है और सब एक-दूसरे पर उसी तरह अंतर्निर्भर हैं जैसे परिवार के सभी सदस्य और मानव-शरीर की असंख्य कोशिकाएं। बहाई लेखों में कहा गया है: *"क्या तुम नहीं जानते कि हमने तुम सबको एक ही तत्व से क्यों उत्पन्न किया है? ताकि कोई भी स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ न समझे।"* भगवान बुद्ध ने लिखा है: *"वह जो जीवन की एकता का अनुभव करता है वह सभी जीवों में अपने ही आत्म-तत्व को देखता है और हर किसी पर पूर्वाग्रहरहित दृष्टि डालता है।" "केवल वही सच्चा द्रष्टा है जो हर जीव में उसी परमात्मा के दर्शन करता है...हर जगह उसी परम तत्व को देखता है और इस प्रकार न वह स्वयं को हानि पहुंचाता है और न दूसरों को"* – ये भगवान श्रीकृष्ण के वचन हैं। 'टोराह' में अंकित वचन है: *"तुम अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करोगे जैसे स्वयं से।"* दूसरी ओर प्रभु यीशु मसीह ने ये वचन उचारे हैं कि *"किसी ने परमेश्वर को नहीं देखा है, लेकिन यदि हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं तो परमेश्वर हमारे ही भीतर निवास करता है और उसका प्रेम हमारे भीतर परिपूर्ण होता है।"* इसी तरह, हम कुरान में पढ़ते हैं: *"अपने माता-पिता और बंधु-बांधवों, और अनाथों एवं जरूरतमंदों, और उस पड़ोसी के प्रति जो तुम्हारा सगा है और उस पड़ोसी के प्रति भी जो अजनबी है, और अपने पास के साथी, और राह से गुजरने वालों के प्रति भी, करुणा दर्शाओ।"*

आज के दौर में, कोरोना वायरस का संक्रमण मानव-परिवार की एकता और सबके परस्पर एक-दूसरे से सम्बंधित होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है, जहां एक व्यक्ति का कल्याण सबके कल्याण पर निर्भर है। जैसाकि विगत कुछ सप्ताहों में हमें देखने को मिला है, इस संकट से मुक्ति के मार्ग में हमारे सामने खड़ी सबसे बड़ी बाधा है एक व्यक्ति, समुदाय या राष्ट्र के रूप में हमारे स्वार्थी अथवा आत्म-केन्द्रित होने की प्रवृत्ति। "हम" और "वे" के रूप में दुनिया को बांटने वाली हमारी चिर-प्राचीन आदत (जिसे कई बार धर्म के नाम पर भी पोषित किया जाता है) और अपनी चिंता केवल उसी समूह या समुदाय तक सीमित रखना जिससे हम वास्ता रखते हैं – वर्तमान आपदा के प्रसंग में यह एक खतरनाक और जीवन को संकट में डाल देने वाली आदत साबित हुई है।

मानवजाति की एकता से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ दूसरा सिद्धान्त है अपने रचयिता परमात्मा के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त करना एवं निःस्वार्थ तथा त्यागपूर्ण सेवा के माध्यम से सबके कल्याण की चिंता करना। हमारी सेवा 'सार्थक' हो सके, इसके लिए आवश्यक है कि वह वर्तमान संसार में लोगों की जरूरतों और चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करती हो। अतः धार्मिक होने का मतलब है अभी और इस वर्तमान क्षण में मानवजाति का सक्रिय सेवक होना, अपनी प्रतिभाओं और क्षमताओं का उपयोग वर्तमान समय की चुनौतियों के निराकरण के लिए करना और बिना किसी भेदभाव के हर किसी के कल्याण में अपना योगदान देना। इस निःस्वार्थ एवं त्यागपूर्ण सेवा का साक्षात स्वरूप हमें आज डॉक्टरों, स्वास्थ्यकर्मियों, पुलिसकर्मियों, मीडिया के लोगों और सरकारी कर्मचारियों के काम में देखने को मिलता है जो अपने व्यक्तिगत जीवन को घोर जोखिम में डालकर भी अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। इस बात में जरा भी संदेह नहीं हो सकता कि ये अनेक बहादुर लोग जब अपने अंतर्मन में उन अपार जोखिमों के बारे में विचार करते होंगे जिनका सामना उन्हें हर रोज, हर घड़ी, अपना कर्तव्य निभाते हुए करना होता है तो उनकी आध्यात्मिक चेतना ही वह शक्ति बनकर उभरती होगी जो उन्हें इन प्रयासों को जारी रखने और अपने संकल्प को मजबूती देने की ताकत देती है। आगे आने वाले दिनों, सप्ताहों और महीनों में, और भी अनेक लोगों का आह्वान किया जाएगा कि वे भी ऐसे ही त्याग का परिचय दें और दूसरों की भलाई के लिए अपनी सेवा प्रदान करें,चाहे वह सेवा कितनी ही छोटी क्यों न हो। वस्तुतः, कानून का आदर करने वाले तमाम नागरिकों द्वारा सोशल डिस्टेंसिंग एवं अपने सामाजिक तथा आर्थिक जीवन पर लागू

किए गए प्रतिबंधों का दिल से पालन करना भी सबके लिए की जाने वाली एक उत्तम सेवा का रूप माना जा सकता है।

अंत में, इस महामारी के समय धर्म के नाम पर जिस धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास एवं विज्ञान की अवहेलना को अभिव्यक्ति दी जा रही है, उनके बारे में भी एक स्पष्टीकरण। इन बातों ने अपरिमित क्षति पहुंचाई है – न केवल हजारों लोगों को वायरस के संसर्ग में लाकर बल्कि लोगों के बीच के परिसंवाद को अर्द्धसत्य, भ्रामक बातों, षडयंत्रकारी सिद्धान्तों और 'कयामत के दिन' जैसी कल्पनाजनित बतों के माध्यम से लोगों को भरमा कर भी। इन सबके कारण लोगों के मनो-मस्तिष्क पर निराशा के घने बादल छाए हैं और विचारों की स्पष्टता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस अंधकार को छिन्न-भिन्न करने वाली अगर कोई बात है तो वह है यह सिद्धान्त कि सच्चा धर्म वह है जो विज्ञान एवं स्वीकार्य तर्कशीलता के साथ तालमेल मिलाकर चलता है। धर्म आध्यात्मिक यथार्थ के नियमों और सिद्धान्तों का उसी तरह प्रतिपादन करता है जैसे विज्ञान ने हमें भौतिक जीवन को नियंत्रित करने वाले नियमों की खोज में सहायता दी है। जीवन के आध्यात्मिक एवं भौतिक इन दोनों ही पहलुओं में प्रगति के लिए मनुष्य को विज्ञान और धर्म दोनों की जरूरत है। अपने सच्चे रूप में, धर्म सत्य की स्वतंत्र खोज के सिद्धान्त का समर्थन करता है। हर व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह तर्कबुद्धि से मार्गदर्शन पाते हुए, न कि अंधानुकरण के माध्यम से, स्वतंत्र रूप से आध्यात्मिक सत्य को जाने और समझे। इसी तरह, यह भी आवश्यक है कि धर्म एवं अज्ञान-आधारित अंधविश्वास के बीच हम अन्तर करना सीखें। हालांकि इस अन्तर को स्पष्ट कर पाना हमेशा आसान नहीं होता लेकिन यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि इस अन्तर को पहचाना जाए ताकि धर्म के नाम पर दिए गए बयानों को तर्क की कसौटी पर कसके देखा जा सके, उनका तर्कसंगत विश्लेषण किया जा सके। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो इस बात का खतरा रहेगा कि स्वीकृति एवं मूर्खतापूर्ण संपुष्टि के लिए, धार्मिक परिसंवाद हर तरह के कट्टरवादी, करिश्माई और यहांतक कि हानिकारक विचारों का मंच बन जाएगा। धर्म के नाम पर किए गए विभिन्न प्रकार के दावों के संदर्भ में जबतक ऐसा तर्कपूर्ण रवैया अख़्तियार नहीं किया जाएगा तबतक धर्मप्रेमी लोग नेतृत्व-लोलुप एवं ताकत के भूखे लोगों द्वारा अंधविश्वास एवं कट्टरवाद की ओर भटकाए जाते रहेंगे।

उपरोक्त वक्तव्य के माध्यम से हम यह जताने की इच्छा नहीं रखते कि ज्ञान एवं आचरण की एक प्रणाली के रूप में धर्म की विशालता एवं गहनता को कुछ थोड़े-से सिद्धान्तों में समेटा जा सकता है। बल्कि उन सिद्धान्तों पर ध्यान केन्द्रित करने का हमारा इरादा इस निमित्त है कि उनसे हर धर्म के मागर्दर्शन के महासिंधु से मथकर उन शिक्षाओं को निकाला जा सकता है जो वर्तमान संकट के बारे में हमारे प्रतिकार्य को एकजुट करने में अत्यंत प्रासंगिक हैं। हम यह भी दावा नहीं करते कि वर्तमान आपदा के संदर्भ में प्रयोग में लाने की दृष्टि से धर्म की बस इतनी ही शिक्षाएं हैं। और भी कई शिक्षाएं हो सकती हैं जिनकी पहचान धर्मों के विद्वानजन द्वारा की जा सकती है और आशा की जाती है कि सबके कल्याण को बढ़ावा देने के मंतव्य से धर्म की भूमिका के प्रसंग में उन सब बातों पर जीवन्त चर्चा की जा सकती है। तथापि, यह घड़ी इतनी निर्णायक एवं महत्वपूर्ण है कि हम बिना कोई देर किए इन आरंभिक विचार-बिंदुओं को साझा करने के लिए प्रेरित हुए हैं।

सबसे प्रेम करने वाले सिरजनहार परमेश्वर तथा मानवजाति की अच्छाई में हमारी निष्ठा हमें आश्वस्त करती है कि मानवता इस अग्नि-परीक्षा से और अधिक मजबूत, और अधिक एकजुट होकर उभरेगी तथा अपनी अंतर्निहित एकता एवं परस्पर-निर्भरता को वह और ज्यादा गहराई से समझेगी।

1. पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती, अध्यक्ष और आध्यात्मिक प्रमुख, परमार्थ निकेतन आश्रम, ऋषिकेश, उत्तराखंड

2. डॉ. इमाम उमर अहमद इलियासी, मुख्य इमाम, अखिल भारतीय इमाम संगठन

3. डॉ. अनिल जोसेफ थॉमस कॉटो, दिल्ली के आर्चबिशप, नई दिल्ली

4. डॉ. पीटर मचाडो, बैंगलोर, कर्नाटक के आर्चबिशप

5. डॉ. यूहानोन मार डेमेट्रियस, मेट्रोपॉलिटन, दिल्ली का डायोसेस, मलंकरा सीरियन ऑर्थोडॉक्स चर्च

6. डॉ. जोनाथन अंसार, मेट्रोपॉलिटन आर्बिचशप, नेशनल चर्च ऑफ इंडिया (एंग्लो कैथोलिक समुदाय)

7. रब्बी ईजेकील मालेकर, मुख्य पुजारी, यहूदा हयाम, आराधनालय, नई दिल्ली

8. स्वामी शांतात्मनंदा , सचिव, रामकृष्ण मिशन, नई दिल्ली

9. गोस्वामी सुशील जी महाराज ब्रिघू पीठाधीश्वर, राष्ट्रीय संयोजक, भारतीय सर्व धर्म संसद, नई दिल्ली

10. भारत के बहाईयों के सार्वजनिक मामलों का कार्यालय, नई दिल्ली

11. आचार्य लोकेश मुनि, संस्थापक, अहिंसा विश्व भारती, नई दिल्ली

12. श्री परमजीत सिंह चंडोक, अध्यक्ष, बंगला साहिब गुरुद्वारा, नई दिल्ली

13. स्वामी अग्निवेश, आर्य समाज के विद्वान और सामाजिक कार्यकर्ता

14. गेशे दोरजी दमदुल, निदेशक, तिब्बत हाउस, नई दिल्ली

15. सुनील सोलोमन गज़न, प्रेस्बिटेर प्रभारी, क्राइस्ट चर्च नोएडा, यूपी

16. युधिष्ठिर गोविंदा दास ब्रह्मचारी, कंट्री डायरेक्टर, कम्युनिकेशंस, इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस (इस्कॉन, इंडिया)

17. डॉ. ख्वाजा इफ्तिखार अहमद, अध्यक्ष, इंटरफेथ हार्मनी फाउंडेशन ऑफ इंडिया, नई दिल्ली

18. प्रो. सलीम इंजीनियर, उपाध्यक्ष, जमात-ए-इस्लामी हिंद

19. डॉ. एम. डी. थॉमस, संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हारमनी एंड पीस स्टडीज, नई दिल्ली

20. प्रो. एम.एम. वर्मा, संस्थापक और अध्यक्ष, इंटरफेथ फाउंडेशन ऑफ इंडिया, नई दिल्ली

21. डॉ. केज़्वीनो अराम, अध्यक्ष, शांति आश्रम, कोयम्बटूर, तमिलनाडु

22. गेर्शोभाई ख्रीस्ती, प्रबंधक, चर्च और इंटरफेथ रिलेशंस, वर्ल्ड विजन इंडिया

23. मनमोहिनी साहू, चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया, ओडिशा

24. डॉ. पल्लव कुमार लीमा, यूनाइटेड बिलीवर्स काउंसिल ऑफ चर्चेस, भुवनेश्वर, ओडिशा

25. डॉ. जसबीर सिंह, उपाध्यक्ष, राजस्थान सिख समाज, पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग, जयपुर।